ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 292-294

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-III, Issues-18, YEAR- Dec. -2020

# संस्कृत साहित्य में गंगा

**कृष्ण चन्द चौरसिया** Email : aaryvrat2013@gmail.com

Received- 28.06.2020, Revised- 01.07.2020, Accepted - 04.07.2020

***सारांश–*** *तत्र धन्य महाभाग भारतवर्षमीरितम्। तत्र धन्यो महाभाग हिमवद्देशसंज्ञकः।।*
*तत्राणि धन्या ते देशा यत्र गंगा सरिद्वरा।*
*ळरेः सान्तिध्यकं स्थानं तत्रापि हि मुनीश्वरः ।।*
*स्कन्द पुराण, केदारखण्ड–150/139–40*
*अर्थात् भारतवर्ष धन्य है, हिमाचल प्रदेश भी धन्य है परन्तु हिमालय में वह अचल सर्वश्रेष्ठ है जहाँ गंगा विराजमान है। उससे भी अधिक वे क्षेत्र विशेष रूप से धन्य है, जहाँ गंगा के साथ नारायण की भी सन्निधि रहती है।*
*अथ च–*
*गांग–वारि मनोहारि मुरारि–चरणा–न्युतम्। त्रुपरारि–शिरश्चारि पाप–हरि पुनातुमाम्।।*

**कुंजीभूत शब्द–** भारतवर्षमीरितम्, हिमवद्देशसंज्ञकः, शिरश्चारि।

*एसो0प्रो0–संस्कृत श्री भगवान महावीर पी0जी0 कालेज पावानगर (फाजिलनगर), कुशीनगर, (उ0प्र0), भारत*

**अनुरूपी लेखक**

अर्थात जो श्री विष्णु के चरणों से उत्पन्न हुआ है। शिव के सिर पर विराजमान है तथा सम्पूर्ण पापों को हरण करने वाला है तथा सम्पूर्ण पापों को हरण करने वाला है, वह मनोहर जल गंगा मुझे पवित्र करें। पतित पावनी मोक्षदामिनी भगवती भागीरथी गंगा नदी की पवित्रता का महात्म्य भारत में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व में सर्वविदित है। यह भारत की सबसे महत्त्वपूर्ण नदियों में से एक है। यह उत्तर भारत के मैदानों की विशाल नदी है; जो भारत और बंगलादेश में मिलकर 2510 किमी0 की दूरी तय करती है। उत्तरांचल में हिमालय से निकलकर यह भारत के लगभग एक चौथाई भू–भाग से प्रवाहित होती हुई बंगाल की खाड़ी में मिलती है। गंगा नदी को उत्तर भारत की अर्थव्यवस्था का मेरूदण्ड भी कहा गया है। यह भारत की राष्ट्रनदी को उत्तर भारत की राष्ट्र–नदी ही नहीं अपितु संस्कृत साहित्य की मानवीय चेतना को भी प्रवाहित करती है। संस्कृत वाङ्मय में गंगा जह्नुसुता, त्रिपथगा, देवापगा, भागीरथी, मन्दाकिनी, सुरसरि, क्षेमवती, तेजोमयी, मन्दा, लिंग्डधारिणी, हिमकन्या, नारायणी, विश्वमित्रा, रेवती, वृहती, लोकधामी, विश्वमुख्या, शिवपत्नी, नन्दिनी, पृथ्वी, विरणा, पारावरगता, स्कन्दमाता, आद्या, तारा, उग्रा, मुख्यजल्पा, संजीवनी, मोदादायिनी, सागरी, भीष्ममाता, शान्तनुपत्नी इत्यादि सहसों गंगा के नाम है। गमयति यत् भगवद पद्म सा गंगा अर्थात् वह सरिता जो अपने में अवगाइन करने वाले को भगवद् चरणों में पहुँचा देती है, वह गंगा है। गम्यते प्राप्यते मोक्षार्शिभिः इति गंगा अर्थात् मोक्ष की कामना से जिसके पास श्रद्धा से जाते हैं वह गंगा है जिसका अवतरण अन्तरिक्ष से होता है। वह कभी ब्रह्मदेव बनती है तो कभी राधागंद्रव ।

**जल की उत्पत्ति –** विषयक अवधारणा में वैदिकमत एवं आधुनिक वैज्ञानिक मत में सभ्यता का अद्भुत योग द्योतित होता है। जल के देवता के रूप में वरूणदेव का उल्लेख किया गया है। जल की प्रमुख स्रोत नदियाँ जीव मात्र को अपनी अमृतमयी धारा से तृप्त करती रही है। नदियों के प्राग्ङण में मानव प्रारम्भ से ही जीवन की नैर्सिगक व्यवस्थाओं का क्रियान्वयन करता आ रहा है यही कारण कारण है कि भारतवर्ष में नदियों को साधारण प्रवाह रूप में नहीं अपितु करूणा वार्षिकी जीवनदायिनी वात्सल्यमयी जननी के रूप में अंगीकार किया जाता रहा है। भारतवर्ष की गंगा एवं यमुना नदियों के सामान्य परिचय के अन्तर्गत अध्येय संस्कृत साहित्य में गंगा जहाँ एक और सागर पुणों की मुक्ति हेतु भगीरथ की तपस्या तथा सरस्वती द्वारा उनकों मृत्युलोक में नदी रूप में प्रवाहित होने के श्राप के कारण पृथ्वी अवतरण के प्रसंग की कथा में भागीरथी साह्नवी, भीष्मसू, विष्णुपादोदका, विष्णुप्रिया आदि नामें से प्रासंगिक वर्णन मिलता है। वही गंगा मानव रूप में शान्तनु पत्नी तथा अष्ट पुत्रों की जननी दृष्टिगोचर होती है। देवीरूप में गंगा संस्कृत साहित्य में इंगित होती है।

वैदिक साहित्य के अन्तर्गत गंगा का उल्लेख ऋग्वेद में कम प्राप्त होता है, जबकि उत्तरवैदिक काल के शतपथब्राह्मण में भारत दौष्यन्ति द्वारा गंगा–यमुना के तटो पर अश्वमेध यज्ञ करना बतलाया गया है। रामायण में प्राकृतिक वर्णन की दृष्टि से श्रृग्वेरपुर में पक्षियों से सेवित गंगा की निर्मल जल प्रवाह दृष्टिगोचर होता है, जिनमें विविध वर्ण के पुष्प तथा मकर, मत्स्यादि जलचर सुशोभित होते है। गंगा नदी के तट का वृक्ष–वनस्पतियों से युक्त

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-III, Issues-18, YEAR- Dec. -2020

विश्रामयोग्य होने का उल्लेख है। प्रयागवन नीलवन एवं ताटकवन की प्राकृतिक समृद्धि रामायण में दिग्दर्शित होती है। श्रृंग्वेरपुर में निषादराजगुह की नौ सेना की स्थिति रामायण में प्रतीत होती है। निषाद द्वारा राम के आदर्शों का अनुगमन करके अपने जीवन को सार्थक करने की बात सामाजिक सात्मीकरण के रूप में प्रगट होती है। गंगा तटीय सिद्धाश्रम (बम्सर) के समीप चतुःवर्ण जनों की रक्षा हेतु राम द्वारा ताड़कावण करना परिलक्षित होता है। रामायण में गंगा समीपस्थ वाल्मीकि आश्रम में जन्में सीतापुत्र लव और कुश तथा महाभारत में गंगा को 'गंगा न सदृशं तीर्थम् एवं यमुना को 'सर्वतीर्थ–पुरस्कृता' कहा गया है। गंगा के स्नान, दर्शन, नामोच्चारण व रजधारण आदि धार्मिक कृत्यों की महिमा महाभारत में परिलक्षित होती है। हस्तिनापुर एवं इन्द्रप्रस्थ में वरिष्ठ अधिकारियों से युक्त राजसभा गंगा यमुना की संस्कृति में राजनीतिक प्रासंगिकता को सिद्ध करती है। गंगा यमुना के सांस्कृतिक पटल में आश्रम व्यवस्था एवं वर्ण व्यवस्था की सार्थकता भी महाभारत में प्रतिविम्बित होती है। ज्योतिष की दृष्टि से मुहूर्तानुसार पाण्डवों एवं द्रौपदी का पार्णिग्रहण का तीर्थपामा में उद्यत होना आदि दृष्टिगोचर होता है। गंगा तटीय वातारण में लाक्षाभवन एवं सुरंग निर्माण, हस्तिनापुर में द्यूत सभा तथा इन्द्रप्रस्थ में युधिष्ठर के सभाभवन के निर्माझा की अद्वितीय शिल्पकारी द्योतित होती है। भीष्म द्वारा गंगा की धारा को रोकना 'जानपथ अभियांत्रिकी' (सिविल इंजीनियरिंग) एवं यांत्रिक नाव द्वारा पाण्डवों का वारणावत से गंगा पार करना 'यांत्रिक अभियांत्रिकी' विद्या को इंगित करता है। पुराणों में गंगा–यमुना नदियों के संगस्कृतिक अध्ययन के पटल में सर्वप्रथम अष्टादश पुराणें में ही गंगा–स्थिति का उल्लेख मिलता है। हरिद्वार, काशी आदि में गंगा का निर्मल प्रवाह दिखलायी पड़ता है। इसके साथ ही भागवतपुराण में वर्णित हरिद्वार में गंगातट स्थित आनन्दवन की शोभा का उल्लेख है। कालिदास विरचित रघुवंशम्, कुमारसम्भवम् एवं मेघदुतम् में गंगा की निर्मल कान्ति अभिलक्षित होती है। मेघदूतम् श्याममेघ द्वारा कनरवल में प्रवाहित हो रही गंगा का अनुगमन करने को श्याममयी यमुना का श्वेत कांतिमय गंगा से संगम करने के समान बतलाया गया है। हस्तिमल रचित विक्रान्त कौरवम् एवं सुभद्रा नाटिका में भी गंगा का अविरता एवं निर्मल प्रवाह बतलाया गया है। पं0 जगन्नाथ विरचित पीयूषलहरी में गंगा की निर्मल जलधारा का उल्लेख है। श्री शंकराचार्य विरचित गंगाष्टकम् में गंगा का शुचितापूर्ण जल प्रवाह खिखलाई पड़ता है। भोजरचित चम्पूरामायण में गंगा की प्राकृतिक निर्मलता के साथ ही लोगों का गंगा जल से तर्पण करना अभिलक्षित होता है। आदिशंकराचार्य ने श्री गंगास्त्रोत्रम् में गंगा की स्तुति की है तो वही पं0 जगरनाथ ने 'गंगालहरी' नामक रचना द्वारा गंगा के प्रति अबाध आस्था किखलायी है। आदित्यपुराण के अनुसार राजा भगीरथ की तपस्या के प्रतिफल स्वस्थ्य वैशाख शुम्ल तृतीया गंगा का पृथ्वी पर अवतरण तथा ज्येष्ठ शुक्ल दशमी को हिमालय से निर्गमन हुआ था। यह हरिद्वार, गढ़मुक्तेश्वर, सोटो, प्रयागतथा काशी आदि तीर्थस्थलों से होकर प्रवाहित होती है। गंगा सिन्धु के बाद द्वितीय स्थान पर वर्णित है। यहाँ गंगा 'तटवासीजन' तथा अभिधान 'जावी' के नाम से भी प्रयुक्त हुआ है। श्याम नारायण पाण्डेय ने ऋग्वेद के एक मंच का उदाहरण देते हुए अफगानिस्तान की सात नदियों को सप्त सिन्धु माना है। बलदेव उपाध्याय ने सायणभाष्म का उल्लेख करते हुए कहा है कि सप्त सिन्धु में दक्षिण की नदियाँ नहीं आ सकती है। सायणाचार्य ने अपने भाष्म में गंगादि सात नदियों का उल्लेख किया है परन्तु दक्षिण की नदियों का उल्लेख नहीं किया है। वैदिक काल में गंगा का मैदान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण था, इसके निवासियों को ऋग्वेद में 'गाङ्ग्य' कहा गया है। शतपथ ब्राह्मण में दौष्यन्ति भरत द्वारा इसके तट पर अश्वमेध के लिए 55 घोड़े बाँधने का उल्लेख है।

गंगा के उद्भव और विकास की कथा आदिकवि बाल्मीकि ने रामायण के बालकाण्ड में प्रस्तुत की है। राम के पूछने पर विश्वामित्र उसे बताते हैं कि कपिल मुनि के शाप से भस्म हुए अपने प्रपितामहों का स्वर्ग प्राप्त हो–ऐसी भावना से भगीरथ गंगा को पृथ्वी पर लाने के लिए गोकर्ण तीर्थ में उग्र तपस्या करते है। उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर बझाजी भगीरथ से कहते हैं कि गंगा को पृथ्वी पर लाने के लिए शंकर को प्रसन्न करो। शंकरजी भगीरथ की तपस्या से प्रसन्न होकर उसे अपने मस्तक पर धारण करने की अनुमति प्रदान करते हैं। भगवान शंकर तीव्र वेग के साथ आकाश से गिरती गंगा को अपनी जटा में उलझा लेते हैं, परन्तु भगीरथी की तपस्या से पुनः बिन्दु सरोवर में छोड़ देते है। जहाँ ये सप्त धाराओं में विभक्त होती है। ह्लादिनी, पखनी और नलिनी पूर्व दिशा की ओर प्रवाहित होती है। सुचक्षु सीता एवं महानदी सिन्धु–ये पश्चिम की और प्रवाहित होती है। सातवी धारा भगीरथ का अनुगमन करती है। भगीरथ द्वारा गंगा को पृथ्वी पा लाकर सागर के 60 हजार पुत्रों को मुक्त या सद्गति प्राप्त कराया गया है।

नारी के विविध रूपों में गंगा का वर्णन है। कन्या के रूप में ये हिमवान–मेना की ज्येष्ठ पुत्री गंगा है। जिन्हें लोकहित के निमित देवताओं के मांगने पर हिमवान ने उन्हें धर्मपूर्वक दे दिया। महाभारत के आदिपर्व में गंगा को एक लावष्पमयी नवयुवती के रूप में प्रतिपारित किया गया है; जिसके सौन्दर्य से मोहित होकर हस्तिनापुर के सम्राट शान्तनु ने विवाह किया। गंगा का पल भर भी वियोग शान्तनु को सहन नहीं होता है। कालान्तर में गंगा सात अन्य पुत्रों के साथ ही साथ कालजयी देवव्रत भीष्म की


PIF-7.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-III, Issues-18, YEAR- Dec. -2020

माँ बनती है। यह देवव्रत भीष्म के अभ्युदय से प्रसन्न एवं मृत्यु से मर्माहत हो उठती है। श्रीमद्भगवदगीता में भगवान श्री कृष्ण ने उसे अपना ही स्वरूप माना। वाल्मीकि, शंकराचार्य, कालिदास तथा अन्यान्म स्तोत्रकारों ने अपनी स्तुतियों में प्रायः गंगा के आधिदैविक रूप को स्थापित किया है; परन्तु पण्डितराज जगन्नाथ ने अपनी क्रान्तदर्शिनी प्रतिभा से प्रेरित होकर गंगा के विविध मानवीय रूपों को अपनी गंगा लहरी में प्रस्तुत किया है। इसके अतिरिक्त आस, कालिदास, भट्टघरि, भवभूति, नारायण पण्डित, ..... इत्यादि ने गंगा का उल्लेख किया है। इस प्रकार नदी एवं नारी–इन दोनों रूपों में गंगा वन्दनीया हैद्ध जिनके प्रति लोगों की अपार भक्ति है। अतः विशेष अवसरों पर इनके तट पर आस्था का सैलाब उमड़ पड़ता है। ये मात्र जल का प्रवाह ही नहीं; अपितु माननीव चेतना का प्रवाह है। ललित कलाओं, धार्मिक पारम्परिक उत्सवों एवं संस्कारों में ये रची–बसी है। अतः इनके प्रति लोगों की चेतना अमिट बनी हुई है। इन्होंने अपने अमृतमय जल से लोगों के ह्रदय एवं मस्तिष्क को सींचा है। एतादृशः संस्कृतवाङ्मय में गंगा के प्रति विशेष चेतनता देखने को मिलती है। आदि शंकरचार्य द्वारा रचित गंगा गौरव का प्रतिपादन करता है–

देवि सुरेश्वरि भगवतिगंगे,
त्रिभुवन तारिवपी तरल तरंगे।
शंकर मौलि बिहारिणे विमले,
म्म मतिमस्तां तव पद कमले।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. राधांगद्रवसंयुक्तां तां गंगा प्रणम्यहम्–देवी भागवत, 2/18
इमं में गंगे यमुने सरस्वती
शुतुद्रिं स्तोमं सचता परूष्ण्या।
असिक्न्या मरूद्वृते वितस्तयायी,
कीये श्रृणुह्ला सुषोमया।।
ऋग्वेद 10/75/5
2. इमंमेंगंगे–ऋग्वेद–10/75/5
3. इरूः कक्षो न गाङ्ग्यः–ऋग्वेद 6/45/11
4. द्रविणं जव्याम्–ऋग्वेद 3/58/6
5. यः शम्बर पर्वतेशुक्षियन्तं चत्वारिश्यां शरद्यन्वविन्दत्। ..... सप्तसिन्धु ऋग्वेद 2/12/11–12
6. ब्लदेव उपाध्याय–वैदिक साहित्य तथा संस्कृति, पृ0 939
7. क. गंगाद्यानदीषु–ऋग्वेद, 8/24/27
ख. गंगाधा सप्तसंख्या नदी–ऋग्वेद 1/35/8
ग. सप्तसिन्धून गंगादिनदी–ऋग्वेद 1/35/8
घ. सप्तसंख्याका गंगाधा नद्यो–ऋग्वेद 1/34/8
ड. इमं में गंगा ..... सप्तहि नधः–ऋग्वेद 1/71/7
च. सप्त संख्याका गांधा नद्याः – ऋग्वेद 1/102/2
छ. सप्तसर्पणशीलाः सिन्धून् – ऋग्वेद 4/28/1
ज. गंगाद्या नद्यः ऋग्वेद 4/28/1
8. इरूः कक्षो न गाङ्ग्यः–ऋग्वेद 6/45/3
9. गंगायां वृत्रघ्नेवघ्नात्पंचपंचाशत् हयानिति– शतपथब्राह्मण 13/5/4/11
10. वाल्मीकि रामायण 1/42/19
11. मत्स्यपुराण 121/42
12. क. यत्तोयकणिका स्पेर्श पापिनां ज्ञानसम्भवः। ब्रह्महत्यादिकं पापं कोटिजन्मार्जितं दहेत्।। देवीभागवत 9/12/37 ख. वा0रा0, 1/44/5
ग. विष्णु महापुराण 2/8/102–103
13. वाल्मीकि रामायण 1/35/16–18
14. स कदाचिन्महाराज ददर्श परमां स्त्रियम्। जाज्वल्यमानां वयुषा साक्षत्क्रियामिवापराम्।। सर्वाननवद्यां सुदतीं दिव्याभरण भूषिताम्। सूक्ष्माम्बरधरा मेकां पद्योदरसमप्रभाम्।। तां दृष्ट्वा ह्रस्टरोमा भूद् विस्मितो रूप सम्पदा। पिबन्निव च नेत्राभ्यां नातृप्यत नराधियः।। महाभारत आदिपर्व।
15. ततो भागीरथी देवी तनस्योदके कृते। उत्थाय सलिलाय तस्मात् रूदती शोकविह्वला। परिदेवमती तत्र कौरवानभ्याषत।। महाभारत, अनुशासनपर्व
16. पवनः पवतामस्मि रामः शस्त्रमृताभहम्। झषाणां मकरश्चास्मि स्रोतसामस्मि जाह्नवी।। गीता 10/31.
17. प्रतिमानाटक, पंचम अंक 3/16
18. क. रघुवंशम् 2/26; 13/57.
ख. कुमारसम्भपट, दशमसमे।
19. नीतिशतक, श्रृग्डारशतक तथा वैराग्यशतक (शतकमम)।
20. उत्तररामचरितम् प्रथम अंक।
21. हितोपदेश; मिमलाभ।

*****


PIF-7.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*